

# चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

शालिनी वर्मा\*  
नरेन्द्र कुमार\*\*  
एन.पी.एस. चन्देल\*\*\*  
सौरभ कुमार\*\*\*\*  
राजेन्द्र प्रसाद\*\*\*\*\*

भारत में वर्तमान में अध्यापक शिक्षा के कई कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। जिनमें एक वर्षीय, द्वि वर्षीय, चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम आदि शामिल हैं। प्रारंभ से ही इन विभिन्न कार्यक्रमों की गुणवत्ता, उपयोगिता, महत्ता आदि को लेकर शिक्षाशास्त्रियों के मध्य मतभेद रहे हैं। इस शोध-पत्र के माध्यम से शोधार्थियों ने चार वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के बारे में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत जानने व उनके अभिमतों के आधार पर चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) को एक वर्षीय व द्वि वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों से तुलना कर प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन में 14 प्रश्नों की एक प्रश्नावली का प्रयोग कर 101 अध्यापक-प्रशिक्षकों से अभिमत लिए गए तथा प्राप्त अभिमतों की काई-वर्ग परीक्षण ( $\chi^2$ ) द्वारा गणना की गई। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि अध्यापक-प्रशिक्षक यह मानते हैं कि आई.टी.ई.पी. के संचालित होने से विद्यार्थी-शिक्षक अधिक पेशेवर व शिक्षण पेशे के प्रति अधिक समर्पित होंगे। साथ ही इस कार्यक्रम से शिक्षकों का गुणात्मक विकास भी संभव हो सकेगा व संपूर्ण अध्यापक शिक्षा का उन्नयन होगा। परंतु वर्तमान में इस कार्यक्रम को प्रारंभ करने पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के मतों में भिन्नता पाई गई।

आज़ादी के बाद से वर्तमान तक भारत में शिक्षा सुधारों से अछूता नहीं रहा है व इसे भी समय-समय के प्रत्येक क्षेत्र में अनेक सुधार व बदलाव हुए हैं पर अनेक बदलावों एवं चुनौतियों का सामना करना जिसका तात्कालिक उदाहरण राष्ट्रीय शिक्षा नीति पड़ा। अध्यापक शिक्षा के संबंध में कई समितियों ने 2020 है। अध्यापक शिक्षा भी इन बदलावों व अपने मतानुसार विभिन्न सुझाव दिए जिसमें मुख्यतः

\* शोधार्थी (एस.आर.एफ.), शिक्षा-संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005

\*\* शोधार्थी, शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005

\*\*\* विभागाध्यक्ष, एम.एड./पीएच.डी., शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005

\*\*\*\* असिस्टेंट प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462013

\*\*\*\*\* असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

अध्यापक शिक्षा की अवधि से संबंधित सुझाव थे। भारत में पूर्व में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि एक वर्ष थी, जिसे वर्ष 2014 से दो वर्ष कर दिया गया (एन.सी.टी.ई. रेग्यूलेशन, 2014)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कहा गया है कि वर्ष 2030 से चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम की उपाधि अध्यापक बनने की न्यूनतम योग्यता होगी (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, 15.5)।

यह चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम का सुझाव नवीन नहीं है। एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66) में किया गया था। इस कार्यक्रम के लिए चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव भी दिया गया था। इसी सुझाव के आधार पर चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को सर्वप्रथम 1960 में कुरुक्षेत्र के कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन में एक प्रयोग के रूप में शुरू किया गया था (पाटीदार, 2021)। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा सन् 1963 में चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (बी.एस.सी.-बी.एड., बी.ए.-बी.एड., बी.कॉम-बी.एड.) अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थापित क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में प्रारंभ किया गया था।

इसके बाद शिक्षा आयोग (1964-66) ने चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के विषय में कहा कि, “यदि इन एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को आयोजित करना ही है, और हमारा विश्वास है कि हमने जिस लचीली और विविधतापूर्ण प्रणाली की सिफ़ारिश की है, उसमें इस कार्यक्रम की जगह भी होनी चाहिए, तो फिर इसका

आयोजन विश्वविद्यालयों में होना चाहिए, अलग से बने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में नहीं, जैसा इन दिनों हो रहा है। ये शिक्षा महाविद्यालय कर्मचारी एवं साजो-सामान के मामले में काफी खर्चीले होते हैं। उच्च स्तरीय इन संस्थानों में विद्यार्थी पूरे मन से नहीं आते हैं। जब पूर्व में स्थापित महाविद्यालय हैं ही, तो फिर ऐसी संस्थाओं को और बढ़ाया जाना ठीक नहीं है। जैसा कि हमने सिफ़ारिश की है कि इस तरह के महाविद्यालय बहुविषयी विश्वविद्यालयों में या फिर शिक्षा महाविद्यालयों में होने चाहिए जहाँ वे दूसरे विभागों के साथ अन्य विषयों में सहयोग कर सकें” (कोठारी, 1964)। शिक्षा आयोग की सिफ़ारिश पर सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात के रूरल इंस्टीट्यूट ऑफ़ एजुकेशन में चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम का प्रयोग बंद कर दिया गया। पंजाब सरकार ने भी हरियाणा के अलग राज्य बन जाने के कारण सन् 1969 में चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम को बंद कर दिया।

इससे विपरीत कुछ अन्य समितियों, जैसे— ए.सी. देवगौड़ा समिति (1964), के.सी. सईदीन समिति (1968), कपूर समिति (1974), कुलकर्णी बोस समिति (1980) ने यह सिफ़ारिश की कि चार वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को आगे भी संचालित करते रहना चाहिए। यही कारण है कि इस कार्यक्रम का उन्नयन शिथिल गति से ज़रूर हुआ है, लेकिन ये कार्यक्रम अनवरत अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है (एन.सी.टी.ई. 2001 से उद्धरित)। विभिन्न विकसित देश भी एकीकृत कार्यक्रम के माध्यम से अध्यापकों को प्रशिक्षित कर रहे हैं (कोर. 2019)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा सुझाया गया चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम भी शिक्षा

आयोग (1964–66) के सुझाव के समान ही है कि अध्यापक शिक्षा के लिए अलग से संस्था बनाने की जगह पहले से ही स्थापित बहुविषयक संस्थानों में ही इन कार्यक्रमों को प्रारंभ करना चाहिए। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुसार चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. के साथ-साथ उन मेधावी विद्यार्थियों के लिए जो स्नातक के उपरांत शिक्षण पेशे में जाना चाहते हैं उनके लिए द्वि वर्षीय एवं परास्नातक के उपरांत एक वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम भी उपलब्ध कराए जाएंगे (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, 5.23)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में नई शैक्षिक संरचना 5+3+3+4 की सिफारिश की गई है। इसे सभी राज्यों में लागू किया जाएगा। वर्तमान का द्वि वर्षीय बी.एड. अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम मूल रूप से कक्षा 6 से कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों के लिए न्यूनतम योग्यता है तथा डी.एल.एड. कार्यक्रम कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के अध्यापकों को तैयार करने हेतु है। वर्तमान अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में 5+3+3+4 शैक्षिक संरचना के फाउंडेशनल स्टेज में प्रथम तीन वर्षों एवं सेकेंडरी स्टेज में अंतिम 2 वर्षों के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों का अभाव है। अतः चार वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा इस अंतराल को भरा जा सकता है। साथ ही चार वर्ष अवधि होने के कारण विद्यार्थी-शिक्षक अपने चयनित स्तर के अनुसार शिक्षणशास्त्र व विषयवस्तु के ज्ञान को एकीकृत रूप में भी प्राप्त कर सकेंगे।

किसी भी कार्यक्रम को लागू करने से पहले उसके बारे में उस कार्यक्रम से संबंधित हितधारकों से उनके विचार लेना भी आवश्यक होता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को एक अनिवार्य योग्यता के रूप में घोषित किया

गया है। अतः ऐसे समय में जब शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार) चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के प्रति संवेदनशील है, तो यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि इस कार्यक्रम के प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत ज्ञात किए जाएँ। कोई भी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम चाहे कितना भी रोजगारपरक एवं रुचिकर क्यों न हो, जब तक अध्यापक-प्रशिक्षक उस कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक सोच नहीं रखेंगे, तब तक वह कार्यक्रम उन्नयन के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता है। अतः शोधार्थियों को चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत ज्ञात करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

### शोध के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे—

- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों की पेशेवर एवं शिक्षण पेशे के प्रति समर्पण पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का शिक्षण पेशे में प्रतिभाशाली, गंभीर एवं शिक्षण पेशे में रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रवेश पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का निवेश पर प्रतिलाभ, भ्रष्ट संस्थानों पर नियंत्रण एवं अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की माँग पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का अध्यापकों के गुणात्मक विकास एवं अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया के उन्नयन पर प्रभाव के संबंध

में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।

- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण विधियों एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को प्रारंभ करने अथवा न करने पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।

### परिकल्पनाएँ

इस शोध की शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार थीं—

- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों की पेशेवर एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति समर्पण पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षक कोई स्पष्ट अभिमत नहीं रखते हैं।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का शिक्षण व्यवसाय में प्रतिभाशाली, गंभीर एवं रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रवेश पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षक कोई स्पष्ट अभिमत नहीं रखते हैं।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का निवेश पर प्रतिलाभ, भ्रष्ट संस्थानों पर नियंत्रण एवं शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम की माँग पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षक कोई स्पष्ट अभिमत नहीं रखते हैं।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का शिक्षकों के गुणात्मक विकास एवं शिक्षक-प्रशिक्षण प्रक्रिया उन्नयन पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षक कोई स्पष्ट अभिमत नहीं रखते हैं।

- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण विधियों एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षक कोई स्पष्ट अभिमत नहीं रखते हैं।

- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को प्रारंभ करने अथवा न करने के प्रति अध्यापक-प्रशिक्षक कोई स्पष्ट अभिमत नहीं रखते हैं।

### शोध विधि

इस शोध अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया था।

### न्यादर्श

इस शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में आकस्मिक चयन विधि द्वारा केंद्रीय विश्वविद्यालयों (दिल्ली विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय), राज्य विश्वविद्यालयों (मेरठ विश्वविद्यालय, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, डॉ. बी. आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक), डीम्ड विश्वविद्यालय (दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (भोपाल एवं अजमेर) के कुल 200 अध्यापक-प्रशिक्षकों का चयन किया गया था। आँकड़े एकत्रीकरण करने हेतु 05 स्तरीय अभिमत मापनी गूगल फार्म (ऑनलाइन) के रूप में बनाई गई थी। जिस पर 101 अध्यापक-प्रशिक्षकों ने अपनी प्रतिक्रियाएँ दीं।

### उपकरण

इस शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थियों द्वारा निर्मित 'अध्यापक-प्रशिक्षकों की आई.टी.ई.पी. के प्रति अभिमत मापनी' का प्रयोग किया गया था। इस मापनी की विषयवस्तु वैधता (11 विशेषज्ञों के

मतों पर आधारित) ज्ञात की गई। मापनी की वैधता गुणांक 0.74 प्राप्त हुई। मापनी की विश्वसनीयता क्रॉनबेक अल्फा विधि से ज्ञात की गई थी, जिसका मान 0.948 प्राप्त हुआ। इस मापनी के अंतिम प्रारूप में कुल 14 कथन रखे गए। जिसका मापन पाँच बिंदु मापनी (अत्यधिक असहमत, असहमत, कुछ सीमा तक सहमत, सहमत, अत्यधिक सहमत) पर निर्धारित किया गया। सकारात्मक कथनों पर मापनी का मान 5, 4, 3, 2 एवं 1 तथा नकारात्मक कथनों पर मापनी का मान 1, 2, 3, 4 एवं 5 रखा गया था।

### प्रदत्त विश्लेषण

#### आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों के पेशेवर एवं शिक्षण पेशे के प्रति समर्पण पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत

प्रस्तावित चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का विद्यार्थी-शिक्षकों की पेशेवर एवं शिक्षण पेशे के प्रति समर्पण पर क्या प्रभाव पड़ेगा? के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत जानने के लिए संबंधित कथनों पर अभिमत लिए गए तथा

प्राप्त आवृत्तियों के प्रतिशत पर समान वितरण परिकल्पना पर काई वर्ग ( $\chi^2$ ) परीक्षण का मान ज्ञात किया गया। इसे तालिका 1 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दोनों ही कथनों के लिए प्राप्त  $\chi^2$  मान 24.1 व 16.28,  $\chi^2$  तालिका के स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.01 के तालिका मान 13.28 से अधिक है। अतः 0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना “चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों की पेशेवर एवं शिक्षण पेशे के प्रति समर्पण पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना” को अस्वीकृत किया जाता है। तालिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि 63.63 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. द्वारा भावी अध्यापकों को अधिक पेशेवर बनाया जा सकेगा। वहीं 55.44 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षकों का मानना है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. द्वारा अधिक समर्पित अध्यापक तैयार किए जा सकेंगे।

तालिका 1— कथनवार अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमतों के प्रतिशत,  $\chi^2$  के मान एवं सार्थकता

| कथन                                                                        | अध्यापक-प्रशिक्षकों का प्रतिशत |       |                  |       |              | $\chi^2$ मान | सार्थकता           |
|----------------------------------------------------------------------------|--------------------------------|-------|------------------|-------|--------------|--------------|--------------------|
|                                                                            | अत्यधिक असहमत                  | असहमत | कुछ सीमा तक सहमत | सहमत  | अत्यधिक सहमत |              |                    |
| भावी अध्यापक को चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. द्वारा अधिक पेशेवर बनाया जा सकेगा   | 9.90                           | 10.89 | 15.84            | 32.67 | 30.69        | 24.10        | .01 स्तर पर सार्थक |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के द्वारा समर्पित पेशेवर शिक्षक तैयार किए जा सकेंगे | 8.91                           | 11.88 | 23.76            | 27.72 | 27.72        | 16.28        | .01 स्तर पर सार्थक |

अतः कहा जा सकता है कि अध्यापक-प्रशिक्षक यह स्पष्ट अभिमत रखते हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों की पेशेवर एवं शिक्षण पेशे के प्रति समर्पण सार्थक रूप से प्रभावित होगा। यह भी कहा जा सकता है कि चार वर्ष की अवधि का एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थी-शिक्षकों को अधिक पेशेवर एवं समर्पित बनाएगा। चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के द्वारा भावी अध्यापकों को बेहतर पेशेवर बनाया जा सकेगा व बेहतर पेशेवर अध्यापक तैयार हो सकेंगे। इस कार्यक्रम द्वारा विद्यार्थी-शिक्षकों विषयवस्तु तथा शिक्षणशास्त्र का बेहतर समन्वय करना सीख सकेंगे। साथ ही, अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम दीर्घकालिक होने के कारण पेशेवर कौशलों के पर्याप्त अभ्यास एवं व्यावहारिक पस्थितिथियों में उनके उपयोग के अधिक अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

**आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण पेशे में प्रतिभाशाली, गंभीर एवं शिक्षण पेशे में रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों के आकर्षण पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत**

प्रस्तावित चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का शिक्षण पेशे में प्रतिभाशाली, गंभीर एवं शिक्षण पेशे में रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों के आकर्षण पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इसके प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत जानने के लिए संबंधित कथनों पर 5 बिंदु मापनी पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत लिए गए एवं प्राप्त आवृत्तियों के प्रतिशत पर समान वितरण परिकल्पना पर काई वर्ग ( $\chi^2$ ) परीक्षण का मान ज्ञात किया गया जिसे तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है।

**तालिका 2— शिक्षण पेशे में रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों के आकर्षण पर आधारित कथनों व काई-वर्ग ( $\chi^2$ ) के मान**

| कथन                                                                                             | प्रत्यार्थियों का प्रतिशत |       |                     |       |                 | $\chi^2$<br>मान | सार्थकता              |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------|-------|---------------------|-------|-----------------|-----------------|-----------------------|
|                                                                                                 | अत्यधिक<br>असहमत          | असहमत | कुछ सीमा<br>तक सहमत | सहमत  | अत्यधिक<br>सहमत |                 |                       |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को शिक्षण पेशे की ओर आकर्षित किया जा सकेगा। | 13.86                     | 9.90  | 15.84               | 30.69 | 29.70           | 18.46           | .01 स्तर पर<br>सार्थक |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से शिक्षण पेशे के प्रति गंभीर रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षक आएँगे।    | 4.95                      | 11.88 | 13.86               | 20.79 | 48.51           | 57.76           | .01 स्तर पर<br>सार्थक |

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दोनों ही कथनों के लिए प्राप्त  $x^2$  मान 18.46 व 57.76,  $x^2$  तालिका के स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.01 के तालिका मान 13.28 से अधिक है। अतः 0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना “चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का शिक्षण पेशे में प्रतिभाशाली, गंभीर एवं शिक्षण पेशे में रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रवेश पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना” अस्वीकृत की जाती है। कुल 47.17 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षकों का मानना है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को शिक्षण पेशे की ओर आकर्षित करेगा। वहीं 69.3 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक इस कथन से सहमत पाए गए कि चार वर्षीय कार्यक्रम, शिक्षण पेशे के प्रति गंभीर व रुचिकर विद्यार्थी-शिक्षकों को ही आकर्षित करेगा।

अतः कहा जा सकता है कि अध्यापक प्रशिक्षकों का यह अभिमत स्पष्ट है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के संचालित होने पर विद्यार्थी-शिक्षक भाग्यवश शिक्षण पेशे में नहीं आएँगे, बल्कि प्रतिभाशाली, गंभीर एवं शिक्षण पेशे में रुचि रखने वाले विद्यार्थी-शिक्षक ही इस पेशे की ओर आकर्षित होंगे। कक्षा 12 के बाद जो भी विद्यार्थी चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. में प्रवेश लेगा वह अधिक विचार कर ही आएगा। इस प्रकार केवल वही व्यक्ति इस क्षेत्र में आएँगे जो शिक्षण को अपना पेशा बनाने के प्रति गंभीर होंगे। अतः प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही इस ओर आकर्षित होंगे।

### **आई.टी.ई.पी. का निवेश पर प्राप्त प्रतिलाभ, भ्रष्ट संस्थानों पर नियंत्रण एवं चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की माँग पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत**

प्रस्तावित चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के निवेश पर प्राप्त प्रतिलाभ, अध्यापक शिक्षा की डिग्री बेचने वाले संस्थानों पर नियंत्रण एवं चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. की माँग पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इसके प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत जानने के लिए संबंधित कथनों पर 5 बिंदु मापनी पर अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत लिया गया एवं प्राप्त आवृत्तियों के प्रतिशत पर समान वितरण परिकल्पना पर काई-वर्ग ( $x^2$ ) परीक्षण का मान ज्ञात किया गया जिसे तालिका 3 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कथन संख्या 3 के लिए प्राप्त  $x^2$  मान 19.64,  $x^2$  तालिका स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.01 के तालिका मान 13.28 से अधिक है। जबकि कथन संख्या 4 के लिए प्राप्त  $x^2$  मान 12.02,  $x^2$  तालिका के स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 9.49 से अधिक है। जबकि कथन संख्या 5 के लिए प्राप्त  $x^2$  मान 7.76,  $x^2$  तालिका के स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 9.49 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना “चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का निवेश पर प्रतिलाभ, भ्रष्ट संस्थानों पर नियंत्रण एवं अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की माँग पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना” आंशिक रूप से अस्वीकृत की जाती है।

**तालिका 3— निवेश पर प्राप्त प्रतिलाभ, भ्रष्ट अध्यापक शिक्षा संस्थानों पर नियंत्रण एवं चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. की माँग पर प्रभाव व काई वर्ग ( $x^2$ ) के मान को दर्शाती तालिका**

| कथन                                                                                                              | प्रत्यार्थियों का प्रतिशत |       |                     |       |                 | $x^2$<br>मान | सार्थकता             |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------|-------|---------------------|-------|-----------------|--------------|----------------------|
|                                                                                                                  | अत्यधिक<br>असहमत          | असहमत | कुछ सीमा<br>तक सहमत | सहमत  | अत्यधिक<br>सहमत |              |                      |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. में निवेश पर प्रतिलाभ अन्य अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की अपेक्षा अधिक प्राप्त होगा।       | 5.94                      | 15.84 | 27.72               | 30.69 | 19.80           | 19.64        | .01 स्तर पर सार्थक   |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. संचालित करने से अध्यापक शिक्षा की डिग्री बेचने वाले संस्थानों पर नियंत्रण लगाया जा सकेगा। | 16.83                     | 11.88 | 14.85               | 27.72 | 28.71           | 12.02        | 0.05 स्तर पर सार्थक  |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. की माँग एक वर्षीय व दो वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की अपेक्षा अधिक रहेगी।             | 21.78                     | 25.74 | 18.81               | 23.76 | 9.90            | 7.76         | 0.05 स्तर पर असार्थक |

उपरोक्त विश्लेषण से यह पाया गया कि 50.49 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. में निवेश पर प्रतिलाभ अधिक होगा। 56.43 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. द्वारा अध्यापक शिक्षा की डिग्री बेचने वाले संस्थानों पर रोक लग सकेगी। वहीं चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. की माँग एक वर्षीय द्वि वर्षीय की अपेक्षा अधिक होगी, इस कथन के संदर्भ में अध्यापक-प्रशिक्षक एकमत नहीं पाए गए।

अतः कहा जा सकता है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. कार्यक्रम बेहतर पेशेवर अध्यापक तैयार कर सकेगा। इसका प्रभाव विद्यार्थी-शिक्षकों

की पेशेवर क्षमता पर पड़ेगा। इसमें उनके द्वारा किए गए विनिवेश का उन्हें बेहतर प्रतिफल प्राप्त होगा। एक वर्षीय व द्वि वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के कारण एकल निजी अध्यापक संस्थानों की संख्या में अधिक वृद्धि हुई। इसमें अधिकतर संस्थान अति निम्न कोटि के हैं, उनका मुख्य उद्देश्य मात्र डिग्री बेचना है। चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. केवल बहुविषयक संस्थानों में ही चलेगा, अतः उनका विकास अपेक्षाकृत अधिक सुनियोजित होगा। जहाँ तक माँग में कोई भिन्नता नहीं होगी। इसका कारण यह हो सकता है कि दिशाविहीन विद्यार्थियों में एक एवं द्वि वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की माँग अधिक होगी। वहीं समर्पित एवं गंभीर

विद्यार्थियों में चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. की माँग अधिक होगी। इस कारण संभवतः तीनों ही प्रकार के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की माँग में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

### **आई.टी.ई.पी. का अध्यापकों के गुणात्मक विकास एवं अध्यापक-प्रशिक्षण प्रक्रिया के उन्नयन पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत**

प्रस्तावित चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से अध्यापकों के गुणात्मक विकास की संभावनाओं एवं संपूर्ण अध्यापक-प्रशिक्षण प्रक्रिया के उन्नयन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसके प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत जानने की लिए संबंधित कथनों पर 5 बिंदु मापनी पर अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत लिया गया एवं प्राप्त आवृत्तियों के प्रतिशत पर समान वितरण परिकल्पना पर काई वर्ग ( $\chi^2$ ) परीक्षण का मान ज्ञात किया गया जिसे तालिका 4 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कथन संख्या 6 के लिए प्राप्त  $\chi^2$  मान 10.24,  $\chi^2$  के स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान 9.42 से अधिक है। जबकि कथन संख्या 13 के लिए प्राप्त  $\chi^2$  मान 15.78,  $\chi^2$  तालिका के स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.01 के तालिका मान 13.28 से अधिक है। अतः प्राप्त मान यह स्पष्ट करते हैं कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि बढ़ाने से अध्यापकों का गुणात्मक विकास संभव हो सकेगा एवं संपूर्ण अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया का उन्नयन होगा। इन कथनों से अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं जिसमें 55.44 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं कि चार वर्ष होने से अध्यापकों का गुणात्मक विकास संभव होगा। वहीं 53.46 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से संपूर्ण अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया का उन्नयन होगा।

**तालिका 4— अध्यापकों के गुणात्मक विकास एवं अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया के उन्नयन पर प्रभाव व काई वर्ग ( $\chi^2$ ) के मान**

| कथन                                                                                                              | प्रत्यार्थियों का प्रतिशत |       |                     |       |                 | $\chi^2$<br>मान | सार्थकता           |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------|-------|---------------------|-------|-----------------|-----------------|--------------------|
|                                                                                                                  | अत्यधिक<br>असहमत          | असहमत | कुछ सीमा<br>तक सहमत | सहमत  | अत्यधिक<br>सहमत |                 |                    |
| अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि को दो वर्ष की जगह चार वर्ष कर देने से अध्यापकों का गुणात्मक विकास संभव हो सकेगा | 13.86                     | 15.84 | 14.85               | 26.73 | 28.71           | 10.24           | .05 स्तर पर सार्थक |
| आई.टी.ई.पी. से संपूर्ण अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया का उन्नयन होगा                                                   | 9.90                      | 11.88 | 24.75               | 30.69 | 22.77           | 15.78           | .01 स्तर पर सार्थक |

आई.टी.ई.पी. कार्यक्रम में विषय एवं विषय की शिक्षणशास्त्र में समन्वय के कारण विषय अनुरूप शिक्षणशास्त्र की व्यवहारपरकता बढ़ जाती है। जिसके कारण अधिक कुशल एवं दक्ष अध्यापक तैयार होंगे। यह अध्यापक शिक्षा की गुणात्मकता बढ़ाने के अलावा समग्र रूप में शैक्षिक व्यवस्था के उन्नयन में भी सहायक होगा।

### आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण विधियों एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत

प्रस्तावित चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण

विधियों एवं सृजनात्मकता पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसके प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत जानने के लिए संबंधित कथनों पर 5 बिंदु मापनी पर उनके अभिमत लिए गए एवं प्राप्त आवृत्तियों के प्रतिशत पर समान वितरण परिकल्पना पर कोई वर्ग ( $x^2$ ) परीक्षण का मान ज्ञात किया गया। इसे तालिका 5 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कथन 7, 8, 9 व 11 के लिए प्राप्त  $x^2$  मान क्रमशः 21.62, 29.84, 28.46, व 21.03, प्राप्त  $x^2$  तालिका के स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.01 के तालिका मान 13.28 से अधिक है। अतः सार्थकता स्तर 0.01 पर शून्य परिकल्पना

तालिका 5— शिक्षण-कौशलों, शिक्षण विधियों एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव व कोई-वर्ग ( $x^2$ ) के मान

| कथन                                                                                                                  | प्रत्यार्थियों का प्रतिशत |       |                  |       |              | $x^2$ मान | सार्थकता           |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------|-------|------------------|-------|--------------|-----------|--------------------|
|                                                                                                                      | अत्यधिक असहमत             | असहमत | कुछ सीमा तक सहमत | सहमत  | अत्यधिक सहमत |           |                    |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षकों में अधिक शिक्षण विधियाँ व प्रविधियाँ प्रयोग करने की क्षमता विकसित होगी | 4.95                      | 16.83 | 18.81            | 28.71 | 30.69        | 21.62     | .01 स्तर पर सार्थक |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षकों अपने शिक्षण विषय में उत्तम शिक्षण क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकेंगे       | 5.94                      | 8.91  | 22.77            | 33.66 | 28.71        | 29.84     | .01 स्तर पर सार्थक |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षकों में बेहतर शिक्षण कौशल विकसित होंगे                                     | 5.94                      | 11.88 | 20.79            | 36.63 | 24.75        | 28.46     | .01 स्तर पर सार्थक |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षकों में शिक्षण सृजनात्मकता आएगी                                            | 9.90                      | 9.90  | 24.75            | 33.66 | 21.78        | 21.03     | .01 स्तर पर सार्थक |

“चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. का विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण विधियों एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना” अस्वीकृत की जाती है। अतः चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के संचालित होने से विद्यार्थी-शिक्षकों में शिक्षण कौशलों, विधियों, प्रविधियों व सृजनात्मकता का विकास तथा शिक्षण विषय में उत्तम शिक्षण क्षमताओं के प्रदर्शन की क्षमता विकसित हो सकेगी। इन कथनों पर अध्यापक-प्रशिक्षक स्पष्ट रूप से सहमत हैं।

59.40 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षकों में कई प्रकार की शिक्षण विधियाँ व प्रविधियाँ प्रयोग करने की क्षमता विकसित होगी। वहीं 62.37 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षक अपने शिक्षण विषय में उत्तम शिक्षण क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकेंगे। जबकि 61.38 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षकों में बेहतर शिक्षण कौशल विकसित होंगे तथा 55.44 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से विद्यार्थी-शिक्षकों में शिक्षण सृजनात्मकता विकसित होगी।

शिक्षण विधियों को जब तक विषयवस्तु के साथ जोड़कर न पढ़ा जाए उनकी प्रभाविता नहीं बढ़ाई जा सकती, क्योंकि आई.टी.ई.पी. का पाठ्यक्रम शिक्षण विधियों व विषयवस्तु दोनों को एकीकृत करता है। अतः आई.टी.ई.पी. में आए विद्यार्थी-शिक्षकों की शिक्षण दक्षताएँ उत्तम होंगी तथा वे अपने विषय में उत्तम शिक्षण क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकेंगे। सृजनात्मकता का संबंध जहाँ व्यक्ति की बौद्धिक क्षमताओं से होता है, वहीं उसके पूर्वानुभवों, सीखने के स्तर एवं अवसरों की उपलब्धता से भी होता है। चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. इन सभी का अवसर प्रदान करेगा जिससे विद्यार्थी-शिक्षकों में सृजनात्मकता का विकास होगा।

### **चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को प्रारंभ करने अथवा न करने पर अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत**

प्रस्तावित चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के संदर्भ में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत जानने के लिए संबंधित कथन पर 5 बिंदु मापनी पर उनका अभिमत लिया गया एवं प्राप्त आवृत्तियों के प्रतिशत पर समान वितरण परिकल्पना पर कार्ई-वर्ग ( $\chi^2$ ) परीक्षण का मान ज्ञात किया गया। जिसे तालिका 6 में प्रदर्शित किया गया है।

**तालिका 6— चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को प्रारंभ करने अथवा न करने पर अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत व कार्ई-वर्ग ( $\chi^2$ ) के मान**

| कथन                                                     | प्रत्यार्थियों का प्रतिशत |       |                     |       |                 | $\chi^2$<br>मान | सार्थकता            |
|---------------------------------------------------------|---------------------------|-------|---------------------|-------|-----------------|-----------------|---------------------|
|                                                         | अत्यधिक<br>असहमत          | असहमत | कुछ सीमा<br>तक सहमत | सहमत  | अत्यधिक<br>सहमत |                 |                     |
| चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को लागू करना एक सुविचारित कदम है | 14.85                     | 13.86 | 19.80               | 26.73 | 24.75           | 6.67            | .05 स्तर पर असार्थक |

तालिका 6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कथन संख्या 14 के लिए प्राप्त  $x^2$  मान 6.67, जो  $x^2$  तालिका स्वतंत्र्यांश 4 व सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान से कम है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना “चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को प्रारंभ करने अथवा न करने पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना” को स्वीकृत किया जाता है। “चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को लागू करना एक सुविचारित कदम है” इस कथन से 51.48 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक सहमत हैं, जबकि 28 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक असहमत हैं व 19.80 प्रतिशत कुछ स्पष्ट अभिमत नहीं दे पा रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को लागू करने के विचार के बारे में अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमान स्पष्ट नहीं है।

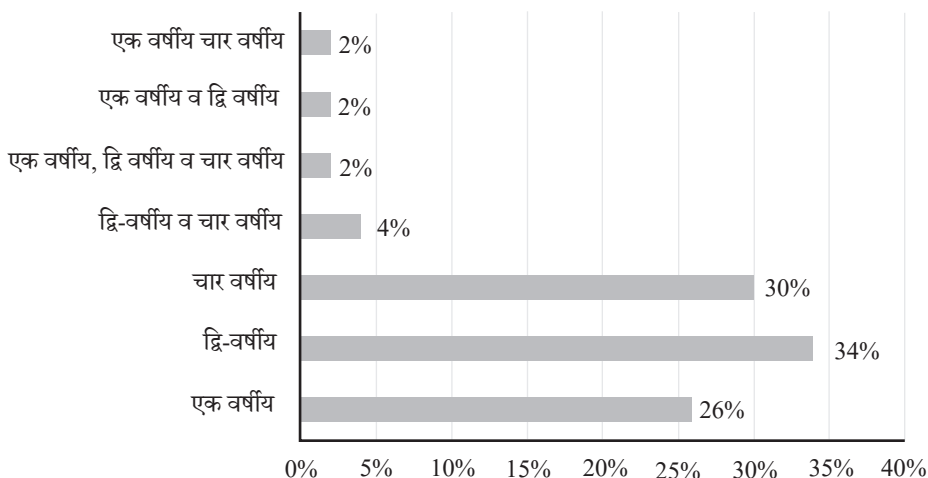
“चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को लागू करना एक सुविचारित कदम है” इस कथन पर अध्यापक-प्रशिक्षकों का एक मत न होने का कारण यह दृष्टिकोण हो सकता है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को पहले पायलट परीक्षण के रूप में कुछ चुने हुए संस्थानों में लागू कर देखना चाहिए व तदुपरांत उपयुक्त शोध अध्ययन का आवश्यकतानुसार नीति बनाते हुए अन्य संस्थानों में लागू करना चाहिए।

### **अध्यापक-प्रशिक्षकों के द्वारा चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के संदर्भ में दिए गए अन्य गुणात्मक सुझाव**

चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के संदर्भ में अध्यापक-प्रशिक्षकों से अन्य सुझाव व टिप्पणियाँ भी पूछी गई थीं। इसमें उनके द्वारा विविध प्रकार के सुझाव दिए गए, जो अग्रलिखित प्रकार हैं—

- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. में अध्यापकों की योग्यता व शिक्षण कौशल पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, मात्र अवधि बढ़ाने से कुछ फ़ायदा नहीं होगा।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. में केवल वही विद्यार्थी प्रवेश लेंगे, जो वास्तव में शिक्षण पेशे में रुचि रखते हैं।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को एक नया नाम देने की कोई आवश्यकता नहीं है। पूर्व में संचालित नाम जैसे बी.ए.-बी.एड., बी.एससी.-बी.एड., बी.कॉम.-बी.एड. आदि को ही यथावत रखा जा सकता है।
- चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. केवल तभी सार्थक सिद्ध होगा जब इसे पूर्णतः लागू करने से पहले एक मॉडल के रूप में गहन परिचर्चा कर निर्मित किया जाए व उसे छोटे समूह पर लागू करके देखा जाए तथा शोध अध्ययन के आधार पर सुधार करते हुए व्यापक स्तर पर लागू किया जाए।
- अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की अवधि को कम और ज्यादा करने के स्थान पर अध्यापकों की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम, संसाधनों आदि की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।
- पूरे भारत देश में बी.एड. कार्यक्रम का पाठ्यक्रम समान होना चाहिए।
- द्वि वर्षीय व चार वर्षीय दोनों ही अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को एक साथ संचालित किया जाना चाहिए।
- अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में सैद्धांतिक पक्ष पर कम तथा प्रयोगात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

**आरेख 1— अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि के संबंध में  
अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का आरेख**



आरेख 1 से स्पष्ट होता है कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. लागू करने के लिए 30 प्रतिशत अध्यापक-प्रशिक्षक समर्थन देते हैं। जबकि 34 प्रतिशत द्वि वर्षीय एवं 26 प्रतिशत एक वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम चलाए जाने के पक्ष में अभिमत रखते हैं। इसलिए कथन संख्या 14 ‘चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को लाना एक सुविचारित कदम है’ पर अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत स्पष्ट नहीं है। परिलक्षित करता है कि इसका कारण यह हो सकता है कि इस कार्यक्रम को लागू करने में अन्य व्यावहारिक कठिनाइयाँ, यथा आधारभूत संरचना, विषयों का एकीकृत पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र आदि हो सकते हैं। अध्यापक-प्रशिक्षक जो एक वर्षीय व द्वि वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में कार्य कर रहे हैं, उन्हें चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के लाभ ज्ञात होते हुए भी पूर्व में संचालित अध्यापक शिक्षा

कार्यक्रम ही अधिक सरल एवं सुविधाजनक लगते हैं। मनोवैज्ञानिक तौर पर व्यक्ति अपनी सुविधा क्षेत्र में रहना चाहता है, संभवतः अध्यापक-प्रशिक्षकों ने इसी कारण एक वर्षीय व द्वि वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को ही चलाए जाने के पक्ष में अपना अभिमत दिया है। इसी कारण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के विविध आयामों के आधार पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत एवं समग्र मतों में अंतर दिखाई देता है।

### निष्कर्ष

इस अध्ययन में चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत का अध्ययन किया गया था। अध्ययन के आधार पर ज्ञात हुआ कि अध्यापक-प्रशिक्षक मानते हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के संचालित होने से विद्यार्थी-शिक्षक अधिक पेशेवर एवं शिक्षण पेशे के प्रति समर्पित होंगे। क्योंकि अकादमिक विषयों एवं उनके शिक्षणशास्त्र में

बेहतर समन्वय होने के कारण यह संभव हो पाएगा। अध्यापक-प्रशिक्षक यह अभिमत रखते हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के आने के बाद शिक्षण पेशे के प्रति गंभीर, प्रतिभाशाली एवं शिक्षण पेशे में रुचि रखने वाले विद्यार्थी ही आकर्षित होंगे। अध्यापक-प्रशिक्षक मानते हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. में निवेश पर प्राप्त प्रतिलाभ अन्य अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की अपेक्षा अधिक होगा एवं भ्रष्ट संस्थानों को नियंत्रित किया जा सकेगा। चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. में प्रवेश लेने से पहले विद्यार्थियों को अपने निर्णय पर गंभीरता से विचार करना होगा।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि बढ़ाने से अध्यापकों का गुणात्मक विकास संभव हो सकेगा एवं संपूर्ण अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया का उन्नयन होगा, ऐसी विचारधारा अध्यापक-प्रशिक्षकों में पाई गई। अकादमिक एवं पेशेवर शिक्षा के विभाजन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी विरोध करती है। अध्यापक शिक्षा में अकादमिक एवं शिक्षणशास्त्रीय शिक्षा को अलग-अलग उपाधियों के द्वारा प्रदान करने से इनके समन्वित ज्ञानोपयोग में कठिनाई आती है, अतः अध्यापक शिक्षा को यह कार्यक्रम गुणात्मक रूप प्रदान कर सकेगा। चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को लागू करने का एक सुविचारित कदम है, इस पर सभी अध्यापक-प्रशिक्षक एकमत नहीं हो पाए हैं। इस मतभेद के पीछे चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. पर लगने वाले अधिक संसाधनों का व्यय, समय अवधि, तैयारी आदि कारण हो सकते हैं।

अध्यापक-प्रशिक्षकों से प्राप्त अन्य सुझावों व टिप्पणियों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ

कि कार्यक्रम की अवधि को बढ़ाने या घटाने से ज्यादा ध्यान अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की संपूर्ण गुणवत्ता पर देना चाहिए। साथ ही यह भी पाया गया कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि पर अध्यापक-प्रशिक्षकों का अभिमत एक नहीं है। फिर भी, कहा जा सकता है कि द्वि वर्षीय व चार वर्षीय दोनों अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के पक्ष में अध्यापक-प्रशिक्षकों का प्रतिशत अधिक है।

अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को बहुत सोच विचार कर प्रारंभ करने की आवश्यकता है। अध्यापक-प्रशिक्षक, चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के प्रति कई बिंदुओं पर सकारात्मक अभिमत रखते हैं, व चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को लागू करने की ओर कुछ रुझान भी रखते हैं, किंतु उनके अनुसार चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. को प्रारंभ करने से पूर्व उससे संबंधित लाभ-हानि पर विचार करना आवश्यक है। इस शोध अध्ययन का निष्कर्ष एन.सी.टी.ई. द्वारा उठाए गए कदमों से भी सही सिद्ध होता है कि वर्ष 2021 में नया गजट लाकर पुनः पायलट परीक्षण के रूप में आई.टी.ई.पी. को शुरू करने के लिए 2022 में आवेदन माँगना आदि। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष इस पर बल देते हैं कि आई.टी.ई.पी. एक अत्यंत उपयोगी कार्यक्रम हो सकता है, यदि इसे उचित समन्वय व अथक प्रयासों के साथ प्रारंभ किया जाए।

### शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के परिणाम अध्यापक शिक्षा नियोजकों, प्रशासकों, प्रशिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थी-शिक्षकों, सभी के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इस शोध अध्ययन के परिणाम अध्यापक

शिक्षा नियोजकों को यह निर्णय लेने में सहायता करेंगे कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. प्रारंभ किया जाना चाहिए या नहीं तथा यह भी अनुमान लगाने में सहायता करेगा कि चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. से अध्यापक-प्रशिक्षकों की क्या अपेक्षाएँ हैं। प्रशासकों व प्रशिक्षकों को इस शोध अध्ययन के परिणामों द्वारा

यह समझने में सहायता मिलेगी कि विषयवस्तु व शिक्षणशास्त्र का एकीकरण सार्थकतापूर्वक किया जाए। विद्यार्थी-शिक्षक भी चार वर्षीय आई.टी.ई.पी. के सकारात्मक पक्ष के प्रति जागरूक हो सकेंगे व शिक्षण पेशे की गंभीरता को समझते हुए शिक्षण में रुचि दिखाएँगे।

### संदर्भ

- ए.सी. देवगौड़ा समिति. 1964. चार वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम 18 जनवरी 2022 को <https://www.worldcat.org/oclc/1583807> से लिया गया.
- एन.सी.टी.ई. 2001. अध्यापक शिक्षा में नीतिगत परिदृश्य विवेचन व प्रलेखन— अध्यापक शिक्षा पर विभिन्न आयोगों व समितियों की अनुशंसाएँ. नागरी प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, नई दिल्ली.
- \_\_\_\_\_. 2014. बीएड. न्यू रेगुलेशन. द गजट ऑफ़ इण्डिया, एक्स्ट्रा आर्डिनरी (भाग-3. खंड 4).
- \_\_\_\_\_. 1968. रिव्यू कमिटी रिपोर्ट ऑन इंटीग्रेटेड प्रोग्राम ऑफ़ टीचर एजुकेशन इन रीजनल कॉलेजेस ऑफ़ एजुकेशनल. पृष्ठ संख्या 24–25.
- कोर, एन. 2019. इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम— एन एनालीसिस थ्रू कम्पैरिटिव पर्सपेक्टिव. 20 अप्रैल 2022 को [https://www.researchgate.net/publication/351411809\\_Integrated\\_Teacher\\_Education\\_Programme\\_An\\_analysis\\_through\\_Comparative\\_Perspective\\_pdf](https://www.researchgate.net/publication/351411809_Integrated_Teacher_Education_Programme_An_analysis_through_Comparative_Perspective_pdf) से प्राप्त किया गया.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार, नई दिल्ली.
- मिनिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन. रिपोर्ट ऑफ़ द एजुकेशन कमीशन 1964–66. भारत सरकार, नई दिल्ली.
- शर्मा, आर. एन. एवं आर. के. शर्मा. 2004. प्रॉब्लेम्स ऑफ़ एजुकेशन इन इंडिया. अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.